शास्त्र हमें याद दिलाता है कि, “ऐसी बातें जो लोगों को ठोकर खाने पर मजबूर करती हैं, अवश्य आएंगी” (लूका 17:1, NIV)।
जब कोई आपके नजदीकी या दूर का व्यक्ति आपको गहरा चोट पहुँचाता है, तो उस दर्द को भूल पाना बहुत कठिन हो सकता है।

यदि आप नए जीवन में जन्मे हैं और जल्दी माफ़ कर देते हैं और छोड़ देते हैं, तो प्रभु ने वास्तव में आपके हृदय को बदल दिया है। लेकिन अगर आप खुद को अनक्षमता या नाराजगी के साथ संघर्ष करते हुए पाते हैं, तो समझें कि यह एक गंभीर समस्या है जिसे हल करने की आवश्यकता है—विशेष रूप से वर्ष की शुरुआत में।

शायद किसी परिवार के सदस्य, प्रियजन, मित्र, जीवनसाथी, आपके बच्चे, पादरी, सह-विश्वासी, शिक्षक या कोई और आपको चोट पहुँचा चुका है। वह कड़वाहट जैसे जहर है—आज इसे छोड़ने का समय है।

एक शक्तिशाली कुंजी है जो हमें अनक्षमता पर विजय पाने में मदद करती है:

यीशु की क्षमा पर विचार करें

एक पल के लिए सोचें कि आपने परमेश्वर के खिलाफ कितनी बार गलतियाँ की हैं। आप कह सकते हैं, “मैंने किसी को कभी गलत
नहीं किया!” लेकिन भगवान के प्रति क्या? क्या आपने कभी उनके

खिलाफ पाप नहीं किया? क्या आपका जीवन पूरी तरह निर्दोष रहा
है? शास्त्र कहता है, “जब वे आपके खिलाफ पाप करते
हैं—क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जो पाप न करता हो…” (2 इतिहास 6:36, NIV)।

अपने विचारों पर विचार करें—कितनी बार वे अशुद्ध हुए, और फिर भी परमेश्वर ने आपको देखा? कितनी बार क्रोध आपके हृदय में जलता रहा, और फिर भी परमेश्वर ने धैर्यपूर्वक देखा? सोचें कि उन्होंने कितनी बार आपको माफ़ किया, और अब भी आपको उनकी क्षमा की कितनी आवश्यकता है।

अगर परमेश्वर ने हमें इतना बहुत कुछ माफ़ कर दिया, तो हम उन लोगों को क्यों नहीं माफ़ कर सकते जिन्होंने हमें पिछले साल, पिछले महीने, या कल चोट पहुँचाई?

कभी-कभी जिसने आपको चोट पहुँचाई, वह कभी माफी नहीं माँग सकता। लेकिन आपको फिर भी उन्हें माफ़ करना चाहिए। यीशु ने स्वयं उन लोगों को माफ़ किया जिन्होंने कभी माफी नहीं माँगी।

“यीशु ने कहा, ‘पिता, उन्हें माफ़ कर दो, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।’ और उन्होंने उनके वस्त्र बाँट लिए” (लूका 23:34, NIV)।

कुछ लोग आपको चोट पहुँचाएँगे और फिर भी मानेंगे कि उन्होंने कुछ गलत नहीं किया। कुछ लोग बार-बार चोट पहुँचाएँगे। फिर भी सिद्धांत वही है: माफ़ करें।

जब आप अपने पापों पर परमेश्वर के सामने विचार करते हैं, तो हमेशा दूसरों को माफ़ करने का कारण मिल जाएगा।

क्षमा की एक दृष्टांत

मत्ती 18:21–27 (NIV) में यीशु के शब्दों पर विचार करें:

“तब पतरस यीशु के पास आया और पूछने लगा, ‘हे प्रभु, मेरा भाई या बहन जो मुझसे पाप करे, उसे कितनी बार माफ़ करूँ? क्या सात बार तक?’
यीशु ने उत्तर दिया, ‘मैं तुम्हें कहता हूँ, सात बार नहीं, बल्कि सत्तहत्तर बार तक।’
इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जो अपने सेवकों के साथ हिसाब निपटाना चाहता था। जब उसने हिसाब शुरू किया, तो एक आदमी जिसे दस हज़ार सोने के थैलों का ऋण था, उसके पास लाया गया। चूंकि वह चुकता नहीं कर सका, मालिक ने आदेश दिया कि वह और उसकी पत्नी और उसके बच्चे और जो कुछ भी उसके पास था, उसे बेचकर ऋण चुका दिया जाए।
तब सेवक उसके सामने घुटनों पर गिर पड़ा। ‘मुझ पर दया करें,’

उसने विनती की, ‘और मैं सब कुछ चुका दूँगा।’
सेवक के मालिक को उस पर दया आई, उसने ऋण माफ़ कर दिया और उसे जाने दिया।”

यह दृष्टांत हमें एक महत्वपूर्ण सत्य सिखाता है: यदि हम परमेश्वर से प्राप्त क्षमा पर विचार करने में असफल रहते हैं, तो हम दूसरों को माफ़ करने में भी असफल हो सकते हैं। लेकिन यदि हम सच में समझ लें कि हमें कितना माफ़ किया गया है, तो यह हमारे हृदय को नरम कर देगा और हम उन लोगों को माफ़ कर पाएंगे जिन्होंने हमें चोट पहुँचाई।

कोई भी दोषरहित नहीं है

शास्त्र कहता है:

“सचमुच, पृथ्वी पर कोई भी धर्मी नहीं है, कोई भी ऐसा नहीं है जो हमेशा सही काम करता हो और कभी पाप न करे” (सभोपदेशक 7:20, NIV)।

जब अन्य लोग आपके खिलाफ बोलें, याद रखें: “क्योंकि आप अपने हृदय में जानते हैं कि आपने भी कई बार दूसरों को शाप दिया
है” (सभोपदेशक 7:22, NIV)।

अर्थात, आपने भी अतीत में लोगों के प्रति अन्याय किया है।

नए साल के लिए प्रार्थना

इस नए वर्ष की शुरुआत में, प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपके हृदय में क्षमा की भावना बनाए। केवल वही ऐसा हृदय दे सकते हैं। यदि आप ईमानदारी से प्रार्थना करेंगे, तो वह आपको बदल देंगे। एक शांत जगह खोजें, उनके सामने जाएँ, और उनसे प्रार्थना करें कि वे आपको वैसे ही स्वतंत्र रूप से क्षमा करने में मदद करें जैसे उन्होंने आपको क्षमा किया।

और याद रखें—इस शुभ समाचार को दूसरों के साथ साझा करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp